

---

# Agastyakritam 01 Shiva Stotram

---

## अगस्त्यकृतं १ शिवस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Agastyakritam 01 Shiva Stotram

File name : agastyakRRitaM01shivastotram.itx

Category : shiva, tAmraparNImAhAtmya, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : tAmraparNImAhAtmya | adhyAya 16/71-85||

Latest update : December 13, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 13, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

अगस्त्यकृतं १ शिवस्तोत्रम्



अगस्त्य उवाच ।  
नमः कल्याणवेषाय कलिकल्मषनाशिने ।  
नमो विहारिणे विश्वविबुधानां हृदङ्गणे ।  
नमः स्वान्तनिवासाय शान्तानां समचेतसाम् ॥ ७१ ॥  
असाधारणकृत्याय नमस्ते कृत्तिवाससे ।  
नीलग्रीवाय नित्याय निस्समाप्त्युदयात्मने ॥ ७२ ॥  
परवामार्धवपुषे नमः क्षेमङ्कराय ते ।  
अर्धं मरकताकारमर्धं स्फटिकसन्निभम् ॥ ७३ ॥  
अद्वैतमपि यत्तेजो द्वैतीभूतं नमो नमः ।  
कान्तं कल्याणनिलयं कलिताशेषकौतुकम् ॥ ७४ ॥  
कन्दर्पकोटिलावण्यं युवानं साम्बमीश्वरम् ।  
मङ्गलाय महस्तोमप्रस्तुताश्चर्यरूपिणे ॥ ७५ ॥  
गौरीनाथाय नाथाय नमस्सोमार्धधारिणे ।  
शिवाय परिपूर्णाय पूर्णानन्दाय वेधसे ॥ ७६ ॥  
महावृषभवाहाय महादेवाय ते नमः ।  
शूलिने नीलकण्ठाय फालचन्द्रावतंसिने ॥ ७७ ॥  
भवाय भवनाशाय पशूनां पतये नमः ।  
जय नाथ कृपादृष्ट्या वत्सं सेचय मां प्रभो ॥ ७८ ॥  
मा मुञ्च पादयुगलादनाथं त्वत्परिग्रहम् ।  
एकस्मादागसो द्वाभ्यां त्रिभ्यो वा रक्ष मां मुहुः ॥ ७९ ॥  
बहुभ्यो हि महादेव मां पाहि करुणानिधे ।  
त्वत्सन्निधिविधानेन हृष्टोऽस्मि नितरां विभो ॥ ८० ॥

आह्लादय कृपादृष्ट्या वृष्ट्या भुवमिवाम्बुदः ।  
घर्मतप्तोऽध्वगोध्वानमतीत्य बहुयोजनम् ॥ ८१ ॥  
अङ्घ्रिपङ्केरुहच्छायमासं पाहि जगद्गुरो ।  
न वेद्मि त्वत्पदाम्भोजादपरं दैवतं परम् ॥ ८२ ॥  
अत एव महादेव त्वामस्मि शरणं गतः ।  
प्रसीद गौरीनाथ त्वं प्रसीद गिरिजापते ॥ ८३ ॥  
प्रसीद सततं मह्यं नाथ कान्तिमतीपते ।  
नमो वेणुवनेशाय महाकल्याणरूपिणे ॥ ८४ ॥  
हाटकाम्भोजिनीतीरवासिने शूलिने नमः ।  
ताम्रातरङ्गसङ्घिन्नपादाम्भोजाय ते नमः ॥ ८५ ॥  
ब्रह्मवृद्धपुरीशाय पूर्वपूर्वाय ते नमः ।  
इति ताम्रपर्णीमाहात्म्ये षोडशाध्यायान्तर्गतं  
अगस्त्यकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
ताम्रपर्णीमाहात्म्य । अध्याय १६/७१-८५ ॥

tAmraparNImAhAtmya . adhyAya 16/71-85..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Agastyakritam 01 Shiva Stotram*

pdf was typeset on December 13, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

